

सावित्रीबाई फुले के सामाजिक सुधार एवं महिला मुक्ति संबंधी विचारों का विश्लेषण

पार्वती देवी¹, प्रोफेसर राम दर्शन²

¹शोधार्थी, राजनीतिशास्त्र विज्ञान एवं लोक प्रशासन विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक।

²शोध निर्देशक, राजनीतिशास्त्र विज्ञान एवं लोक प्रशासन विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक।

DOI: <https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i3.18>

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Received: 12-09-2026

Accepted: 18-10-2026

Published: 26-10-2026

Corresponding Author:

पार्वती देवी

बीज शब्द: सावित्रीबाई फुले, सामाजिक सुधार, महिला मुक्ति, महिला शिक्षा, लैंगिक समानता, सामाजिक न्याय, महिला सशक्तीकरण।

OPEN ACCESS

सारांश

प्रस्तुत शोध-पत्र में उन्नीसवीं शताब्दी की महान समाज सुधारक, शिक्षाविद् एवं महिला सशक्तीकरण की अग्रदूत सावित्रीबाई फुले के सामाजिक सुधार तथा महिला मुक्ति संबंधी विचारों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य महिला शिक्षा, सामाजिक समानता, जातिगत भेदभाव के विरोध तथा स्त्री स्वतंत्रता के क्षेत्र में उनके योगदान को स्पष्ट करना है। सावित्रीबाई फुले ने महात्मा ज्योतिराव फुले के सहयोग से बालिका शिक्षा को प्रोत्साहित किया तथा तत्कालीन समाज में प्रचलित रुढ़िवादी परंपराओं, अस्पृश्यता, बाल-विवाह और महिलाओं के प्रति भेदभावपूर्ण व्यवहार का विरोध किया। उन्होंने शिक्षा को महिलाओं की आत्मनिर्भरता, आत्मसम्मान तथा सामाजिक मुक्ति का प्रभावशाली माध्यम माना। प्रस्तुत अध्ययन में उनके जीवन, शैक्षिक कार्यों, सामाजिक संघर्षों तथा महिला अधिकारों संबंधी विचारों का वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक विवेचन किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सावित्रीबाई फुले के विचार केवल तत्कालीन सामाजिक सुधार तक सीमित नहीं थे, बल्कि आधुनिक भारतीय समाज में लैंगिक समानता, सामाजिक न्याय, महिला सशक्तीकरण तथा समावेशी शिक्षा की अवधारणाओं के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक हैं।

भूमिका:

जन्म एवं प्रारम्भिक शिक्षा

सावित्रीबाई फुले का जन्म 3 जनवरी, सन् 1831 को महाराष्ट्र के सतारा जिले की खंडाला तहसील के नायगाँव नामक स्थान पर हुआ था। उनके पिता का नाम खंडोजी नेवसे तथा माता का नाम लक्ष्मीबाई था। वे माली समाज से संबंधित थीं। उस समय सतारा क्षेत्र में माली समाज के उनके परिवार को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। सावित्रीबाई का जन्म ऐसे समय में हुआ, जब भारतीय समाज में जाति, धर्म और लिंग के आधार पर अनेक प्रकार की असमानताएँ व्याप्त थीं। समाज में ऊँच-नीच की भावना बहुत प्रबल थी और दलितों तथा वंचित समुदायों के लोगों को अनेक सामाजिक अधिकारों से वंचित रखा जाता था। उन्हें शिक्षा प्राप्त करने के समान अवसर नहीं मिलते थे और कई स्थानों पर शिक्षा प्राप्त करने के प्रयासों का भी विरोध किया जाता था। उस समय महिलाओं की स्थिति भी अत्यंत दयनीय थी। लड़कियों को पढ़ाना समाज के अनेक लोगों की दृष्टि में अनुचित माना जाता था। अधिकांश परिवारों में लड़कियों की शिक्षा की

अपेक्षा घरेलू कार्यों को अधिक महत्व दिया जाता था। ऐसी परिस्थितियों में सावित्रीबाई फुले का जन्म हुआ, लेकिन उन्होंने आगे चलकर इन रूढ़िवादी मान्यताओं को चुनौती दी और शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

सावित्रीबाई फुले को बचपन से ही पढ़ने-लिखने तथा नई-नई बातें जानने में रुचि थी। उनके मन में ज्ञान प्राप्त करने की जिज्ञासा थी। वे पुस्तकों के प्रति आकर्षित थीं और उनमें निहित बातों को जानने की इच्छा रखती थीं। हालाँकि उस समय लड़कियों को शिक्षा प्राप्त करने का पर्याप्त अवसर नहीं मिलता था, फिर भी सावित्रीबाई के भीतर सीखने की इच्छा बनी रही। उनके प्रारम्भिक जीवन से संबंधित एक प्रचलित प्रसंग के अनुसार, एक बार वे अपने गाँव में आयोजित मेले में गई थीं। वहाँ उनकी मुलाकात एक ईसाई पादरी से हुई। उस पादरी ने सावित्रीबाई को यीशु के जीवन-चरित्र से संबंधित चित्रों वाली एक पुस्तक दी। पुस्तक देते समय उसने उनसे कहा कि यह भगवान की पुस्तक है। उसने यह भी कहा कि वे पढ़ना तो नहीं जानतीं, लेकिन पुस्तक में बने चित्रों को देखकर उन्हें आनंद प्राप्त होगा। उस समय सावित्रीबाई बहुत छोटी थीं और उन्हें औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने का अवसर नहीं मिला था। फिर भी पुस्तक प्राप्त होने पर उनके मन में उसके प्रति विशेष आकर्षण उत्पन्न हुआ।

बताया जाता है कि लगभग आठ वर्ष की आयु में सावित्रीबाई उस पुस्तक को अपने घर लेकर आईं। जब उनके पिता खंडोजी नेवसे ने पुस्तक देखी, तो उन्होंने उसे फेंक देने के लिए कहा। उस समय समाज में शिक्षा को लेकर अनेक प्रकार की रूढ़िवादी धारणाएँ प्रचलित थीं। विशेष रूप से लड़कियों के पढ़ने-लिखने को अच्छा नहीं माना जाता था। ऐसे वातावरण में सावित्रीबाई के लिए पुस्तक को अपने पास रखना भी एक साहसिक कदम था। उन्होंने अपने पिता की बात मानकर पुस्तक फेंकने से इनकार कर दिया। इस प्रसंग के अनुसार, सावित्रीबाई ने कहा कि यह पुस्तक उन्हें भगवान के नाम पर दी गई है, इसलिए वे इसका अनादर नहीं करेंगी, भले ही इसके कारण समाज उनका विरोध करे या उन्हें कठोर दंड का सामना करना पड़े। उनके इस व्यवहार से उनके साहस, दृढ़ निश्चय और स्वतंत्र विचारों का परिचय मिलता है। इतनी कम उम्र में ही उन्होंने अपने विचारों के प्रति दृढ़ता दिखाई और सामाजिक दबाव के सामने झुकने से इनकार कर दिया। यह घटना उनके जीवन में शिक्षा के प्रति रुचि और ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा का प्रारम्भिक उदाहरण मानी जाती है। सावित्रीबाई के इस व्यवहार से यह भी स्पष्ट होता है कि वे बचपन से ही जिज्ञासु और आत्मविश्वासी थीं। उस समय समाज में प्रचलित अनेक मान्यताएँ महिलाओं को शिक्षा से दूर रखती थीं। लड़कियों को पढ़ने का अवसर देना परिवार और समाज के कई लोगों को अनुचित लगता था। इसके बावजूद सावित्रीबाई ने पुस्तक के प्रति अपना सम्मान बनाए रखा। इस घटना को उनके जीवन में शिक्षा के महत्व को समझने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रसंग के रूप में देखा जाता है। आगे चलकर उन्होंने अपने जीवन में शिक्षा को केवल व्यक्तिगत ज्ञान प्राप्त करने का साधन नहीं माना, बल्कि इसे सामाजिक जागरूकता, समानता और परिवर्तन का माध्यम भी बनाया।

सन् 1840 में सावित्रीबाई फुले का विवाह मात्र नौ वर्ष की आयु में बारह वर्षीय ज्योतिबा फुले से हुआ। महात्मा ज्योतिबा फुले अपने समय के महान शिक्षक, विचारक, समाज सुधारक, लेखक, दार्शनिक, संपादक और क्रांतिकारी व्यक्तित्व थे। उन्होंने समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव, छुआछूत, सामाजिक असमानता और महिलाओं की अशिक्षा जैसी समस्याओं के विरुद्ध आवाज उठाई। उनका मानना था कि शिक्षा के माध्यम से समाज में जागरूकता उत्पन्न की जा सकती है और लोगों को अन्यायपूर्ण परंपराओं से मुक्त होने की प्रेरणा दी जा सकती है। ज्योतिबा फुले के विचारों और उनके कार्यों का सावित्रीबाई के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। उन्होंने सावित्रीबाई की शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा को प्रोत्साहित किया और उनके बौद्धिक विकास में सहयोग दिया। उस समय जब महिलाओं की शिक्षा का विरोध किया जाता था, तब ज्योतिबा फुले का मार्गदर्शन सावित्रीबाई के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ।

सावित्रीबाई ने सर्वप्रथम उस ईसाई पुस्तक को पढ़ने का प्रयास किया, जो उन्हें गाँव के मेले में एक पादरी ने दी थी। इसके बाद उनकी पढ़ने-लिखने में रुचि और अधिक बढ़ी। उन्होंने ज्योतिबा फुले तथा सगुणाबाई के सहयोग और मार्गदर्शन से विभिन्न विषयों की पुस्तकें पढ़ीं। इन पुस्तकों में भारतीय दर्शन, राजनीति, समाज, इतिहास तथा अन्य विषयों से संबंधित सामग्री शामिल थी। इन विषयों का अध्ययन करने से उनके ज्ञान में वृद्धि हुई और उनकी विचारधारा विकसित होने लगी। वे समाज की परिस्थितियों, लोगों के जीवन और प्रचलित सामाजिक व्यवस्थाओं को समझने लगीं। पुस्तकों के अध्ययन से उन्हें यह जानने का अवसर मिला कि समाज में अनेक ऐसी परंपराएँ और प्रथाएँ प्रचलित थीं, जिनके कारण महिलाओं तथा वंचित समुदायों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था।

भारतीय दर्शन, राजनीति, समाज और इतिहास से संबंधित पुस्तकों के अध्ययन ने सावित्रीबाई के विचारों को व्यापक बनाया। उन्होंने समाज में प्रचलित अच्छी और बुरी परंपराओं के बीच अंतर को समझना शुरू किया। उन्हें यह अनुभव हुआ कि जातिगत भेदभाव, महिलाओं की अशिक्षा तथा सामाजिक असमानता जैसी समस्याएँ समाज की प्रगति में बाधा उत्पन्न करती हैं। उन्होंने यह भी समझा कि शिक्षा के अभाव में लोग अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति पर्याप्त रूप से जागरूक नहीं हो पाते। इस प्रकार पुस्तकों से प्राप्त ज्ञान ने उनके भीतर सामाजिक समस्याओं को समझने की क्षमता विकसित की। उनके अध्ययन और अनुभवों ने आगे चलकर समाज सुधार के प्रति उनकी रुचि को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इस प्रकार सावित्रीबाई फुले का जन्म एवं प्रारम्भिक शिक्षा का जीवन अनेक सामाजिक चुनौतियों के बीच विकसित हुआ। बचपन से ही पढ़ने-लिखने में रुचि, पुस्तक के प्रति सम्मान, सामाजिक विरोध के बावजूद अपने विचारों पर दृढ़ रहना तथा ज्योतिबा फुले और सगुणाबाई से प्राप्त सहयोग उनके व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण रहे। उनके प्रारम्भिक जीवन की इन घटनाओं ने उन्हें ज्ञान का महत्व समझने और समाज में व्याप्त कुरीतियों के प्रति जागरूक होने का अवसर दिया। यही प्रारम्भिक अनुभव आगे चलकर उनके जीवन की दिशा निर्धारित करने में सहायक बने।

सामाजिक विरोध और कठिन परिस्थितियों के कारण फुले दंपति को अपने निवास स्थान से संबंधित समस्याओं का भी सामना करना पड़ा। दिए गए विवरण के अनुसार, समाज के विरोध के चलते उन्हें धनकवाड़ी स्थित अपना घर छोड़कर पुणे आना पड़ा। यह परिस्थिति उनके लिए आसान नहीं रही होगी, क्योंकि घर छोड़ने का अर्थ अपने परिचित वातावरण और सुविधाओं से दूर होना था। फिर भी उन्होंने अपने सामाजिक उद्देश्य को सर्वोपरि रखा। पुणे में उन्हें ऐसे लोगों का सहयोग प्राप्त हुआ, जो शिक्षा और समाज सुधार के उनके विचारों से सहमत थे। इस सहयोग ने उन्हें अपने कार्य को आगे बढ़ाने का अवसर दिया। उन्होंने कठिनाइयों को अपने मार्ग की बाधा बनने देने के बजाय उन्हें अपने संकल्प को मजबूत करने का माध्यम बनाया। इस प्रकार फुले दंपति ने यह सिद्ध किया कि समाज के कल्याण के लिए कार्य करने वाला व्यक्ति व्यक्तिगत कठिनाइयों के बावजूद अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ सकता है।

सावित्रीबाई फुले और ज्योतिबा फुले द्वारा नारी शिक्षा के क्षेत्र में किया गया यह प्रयास भारतीय समाज के इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उन्होंने उस समय लड़कियों के लिए विद्यालय खोलने और शिक्षा प्रदान करने का कार्य किया, जब महिलाओं को समान अवसर देने की धारणा भी व्यापक रूप से स्वीकार नहीं की गई थी। उनके प्रयासों ने महिलाओं की शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने में योगदान दिया और समाज को यह संदेश दिया कि लड़कियों को भी ज्ञान प्राप्त करने का पूरा अधिकार है। सावित्रीबाई ने अपने अध्यापन, व्यवहार और विचारों के माध्यम से छात्राओं को शिक्षा के प्रति प्रेरित किया, जबकि ज्योतिबा फुले ने इस कार्य में उनका निरंतर सहयोग किया। दोनों ने मिलकर सामाजिक रूढ़ियों को चुनौती दी और शिक्षा को सामाजिक सुधार का आधार बनाया। उनका संघर्ष केवल अपने समय की लड़कियों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसने आने वाली पीढ़ियों के लिए भी प्रेरणा का मार्ग प्रशस्त किया। इस प्रकार नारी शिक्षा

का शुभारंभ सावित्रीबाई और ज्योतिबा फुले के जीवन का एक ऐतिहासिक अध्याय बना, जिसने भारतीय समाज में महिलाओं की शिक्षा, समानता और आत्मनिर्भरता के महत्व को स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

साहित्यिक सर्वेक्षण:

1. वुल्फ, टी. (2011): “सावित्रीबाई फुले के शैक्षिक विचार और योगदान”, वुल्फ (2011) द्वारा प्रस्तुत सावित्रीबाई फुले संबंधी अध्ययन को शिक्षा में समानता, बाल-केंद्रित दृष्टिकोण और सामाजिक सुधार के संदर्भ में समझा जा सकता है। सावित्रीबाई फुले का योगदान इस विचार को सुदृढ़ करता है कि शिक्षा किसी विशेष जाति, लिंग या सामाजिक वर्ग का विशेषाधिकार नहीं, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार है। उन्होंने ऐसे समय में महिला शिक्षा का समर्थन किया, जब सामाजिक रूढ़ियाँ महिलाओं के ज्ञानार्जन और स्वतंत्र व्यक्तित्व के विकास में बाधा उत्पन्न करती थीं। उनका शैक्षिक कार्य केवल विद्यालयों की स्थापना या शिक्षण तक सीमित नहीं था, बल्कि इसके माध्यम से उन्होंने महिलाओं और वंचित समुदायों की सामाजिक भूमिका को पुनर्परिभाषित करने का प्रयास किया। उनके विचारों की प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है, क्योंकि समावेशी शिक्षा, आलोचनात्मक चिंतन और सामाजिक संवेदनशीलता आधुनिक शैक्षिक व्यवस्था के महत्वपूर्ण उद्देश्य हैं। इस दृष्टि से सावित्रीबाई फुले का जीवन शिक्षा को सामाजिक मुक्ति, आत्मनिर्भरता और मानवीय समानता से जोड़ने वाली प्रेरणादायक विरासत प्रस्तुत करता है।

2. सोमकुमार, पी. (2014): “दलित महिला कवयित्री और कविता में नए विषय”, सोमकुमार (2014) का अध्ययन दलित महिला कविता में उभरती नई वैचारिक दिशाओं और स्त्री-अनुभवों की व्यापक अभिव्यक्ति को रेखांकित करता है। दलित महिला कवयित्रियों ने साहित्य को केवल जातिगत उत्पीड़न के वर्णन तक सीमित न रखकर उसमें लैंगिक असमानता, आत्मपहचान, स्वतंत्रता, सामाजिक न्याय और मानवीय गरिमा जैसे प्रश्नों को भी प्रमुखता प्रदान की है। उनकी कविताएँ उस साहित्यिक दृष्टिकोण को विकसित करती हैं, जिसमें दलित स्त्री स्वयं अपने अनुभवों की व्याख्याकार और अपने अधिकारों की मुखर प्रतिनिधि बनकर सामने आती है। इस प्रकार, दलित महिला कविता में पीड़ा की अभिव्यक्ति के साथ-साथ प्रतिरोध, आत्मविश्वास और परिवर्तन की आकांक्षा भी दिखाई देती है। यह साहित्य दलित विमर्श को व्यापक नारीवादी एवं मानवीय विमर्श से जोड़ते हुए सामाजिक समानता की अवधारणा को अधिक समावेशी बनाता है। इस अध्ययन का विशेष महत्व इस बात में है कि यह दलित महिला को केवल उत्पीड़न की शिकार के रूप में नहीं, बल्कि विचार निर्माण और सामाजिक परिवर्तन की सक्रिय शक्ति के रूप में देखने की प्रेरणा देता है।

3. जैन, एस. (2016): जाति और शिक्षा — “महात्मा ज्योतिराव फुले का दृष्टिकोण”, जैन (2016) का अध्ययन महात्मा ज्योतिराव फुले के शैक्षिक विचारों को सामाजिक न्याय और जातिगत समानता के संदर्भ में समझने का अवसर प्रदान करता है। फुले के लिए शिक्षा केवल ज्ञान अर्जित करने का माध्यम नहीं थी, बल्कि यह उन सामाजिक संरचनाओं को चुनौती देने का एक प्रभावशाली साधन थी, जिन्होंने सदियों से वंचित समुदायों को अधिकारों और अवसरों से दूर रखा था। उन्होंने शिक्षा को दलितों, महिलाओं और अन्य शोषित वर्गों में आत्मसम्मान, तार्किक चेतना तथा स्वतंत्र विचार विकसित करने की प्रक्रिया के रूप में देखा। सावित्रीबाई फुले के साथ उनका शैक्षिक प्रयास इस विचार का व्यावहारिक उदाहरण प्रस्तुत करता है कि सामाजिक परिवर्तन की शुरुआत शिक्षा तक समान पहुँच सुनिश्चित करने से होती है। इस दृष्टि से फुले का योगदान केवल शिक्षा के प्रसार तक सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने शिक्षा को सामाजिक वर्चस्व के विरुद्ध प्रतिरोध और समानतामूलक समाज के निर्माण का आधार बनाया।

4. मंगला, के. डी. (2018) द्वारा प्रस्तुत “सावित्रीबाई फुले: क्रांतिकारी कार्य और साहित्य” शीर्षक अध्ययन सावित्रीबाई फुले के शैक्षिक, सामाजिक और साहित्यिक योगदान को समझने की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इस अध्ययन में उनकी शैक्षिक सोच, क्रांतिकारी व्यक्तित्व, सामाजिक सुधार संबंधी विचारों और साहित्यिक रचनाओं के महत्व पर विशेष बल दिया गया है।

सावित्रीबाई फुले की शैक्षिक विचारधारा अपने समय से आगे की सोच को प्रस्तुत करती है। उन्होंने शिक्षा को केवल व्यक्तिगत उन्नति का साधन नहीं माना, बल्कि इसे समाज में व्याप्त असमानता, अज्ञानता और शोषण को समाप्त करने का माध्यम समझा। उनके अनुसार, शिक्षा के प्रसार से समाज के वंचित वर्गों में जागरूकता उत्पन्न की जा सकती है और उन्हें अपने अधिकारों के प्रति सजग बनाया जा सकता है।

मंगला के अध्ययन के अनुसार, सावित्रीबाई फुले महाराष्ट्र की महिलाओं के जीवन को सकारात्मक दिशा देने वाली महत्वपूर्ण व्यक्तित्व थीं। उन्होंने अपने कार्यों के माध्यम से महिलाओं को यह विश्वास दिलाया कि वे भी शिक्षा प्राप्त कर सकती हैं, सामाजिक जीवन में भाग ले सकती हैं और अपनी योग्यता के आधार पर समाज में सम्मान प्राप्त कर सकती हैं। उनके व्यक्तित्व और कार्यों ने महिलाओं के प्रति प्रचलित रूढ़िवादी धारणाओं को चुनौती दी। उन्होंने यह सिद्ध किया कि महिलाओं की क्षमताएँ पुरुषों से कम नहीं हैं और उन्हें अवसर प्रदान किए जाने पर वे समाज के विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान दे सकती हैं। सावित्रीबाई की उपलब्धियाँ इस बात का प्रमाण हैं कि सामाजिक परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी प्रतिकूल क्यों न हों, दृढ़ संकल्प और निरंतर प्रयास से परिवर्तन संभव है।

5. पांडे, आर. (2019) द्वारा प्रस्तुत "वैश्विक नारीवादी चिंतन के पथ में सावित्रीबाई फुले के नारीवाद का स्थान निर्धारण", शीर्षक अध्ययन सावित्रीबाई फुले के विचारों को नारीवादी चिंतन के व्यापक संदर्भ में समझने का प्रयास करता है। इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य उनके सामाजिक और शैक्षिक कार्यों का विश्लेषण करते हुए यह स्पष्ट करना है कि उनके विचार महिलाओं की स्वतंत्रता, समानता, आत्मनिर्भरता और सामाजिक अधिकारों से किस प्रकार संबंधित थे। सावित्रीबाई फुले ने उन्नीसवीं शताब्दी में जिस प्रकार महिलाओं की शिक्षा और सामाजिक भागीदारी पर बल दिया, वह अपने समय की सामाजिक परिस्थितियों की दृष्टि से अत्यंत प्रगतिशील था। उन्होंने महिलाओं को केवल परिवार और घरेलू जीवन तक सीमित रखने वाली मान्यताओं का विरोध किया तथा उनके बौद्धिक विकास और स्वतंत्र व्यक्तित्व के निर्माण को आवश्यक माना।

इस अध्ययन के अनुसार, सावित्रीबाई फुले के विचारों में नारीवाद की पहली लहर से संबंधित अनेक विशेषताएँ दिखाई देती हैं। नारीवादी आंदोलन की पहली लहर मुख्य रूप से महिलाओं के समान अधिकारों, शिक्षा, नागरिक स्वतंत्रता और सार्वजनिक जीवन में भागीदारी से जुड़ी रही है। सावित्रीबाई ने महिलाओं की शिक्षा को प्राथमिकता देकर उनके बौद्धिक विकास और आत्मनिर्भरता का मार्ग प्रशस्त किया।

अध्ययन के उद्देश्य

1. सावित्रीबाई फुले के सामाजिक सुधार संबंधी विचारों का अध्ययन करना।
2. सावित्रीबाई फुले के महिला मुक्ति, शिक्षा एवं समानता संबंधी विचारों का विश्लेषण करना।

सावित्रीबाई फुले के सामाजिक, शैक्षिक एवं साहित्यिक योगदान से संबंधित पूर्व अध्ययनों का विश्लेषण

सावित्रीबाई फुले उन्नीसवीं शताब्दी की एक महान समाज सुधारक, शिक्षाविद्, कवयित्री और महिला सशक्तिकरण की अग्रदूत थीं। उन्होंने ऐसे समय में महिलाओं की शिक्षा, सामाजिक समानता और मानवीय अधिकारों के लिए कार्य किया, जब भारतीय समाज में जातिगत भेदभाव, अस्पृश्यता, बाल-विवाह, विधवाओं के प्रति अमानवीय व्यवहार तथा महिलाओं की अशिक्षा जैसी अनेक समस्याएँ व्याप्त थीं। उस समय महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने के पर्याप्त अवसर नहीं मिलते थे और समाज के रूढ़िवादी वर्गों द्वारा उनके स्वतंत्र विकास का विरोध किया जाता था। ऐसी परिस्थितियों में सावित्रीबाई फुले ने अपने पति महात्मा ज्योतिराव फुले के साथ मिलकर सामाजिक परिवर्तन की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास किए। उन्होंने शिक्षा को समाज में व्याप्त अज्ञानता, असमानता और शोषण को समाप्त करने का प्रभावशाली माध्यम माना। उनके विचारों और कार्यों ने न केवल महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया, बल्कि समाज के वंचित, शोषित और पिछड़े वर्गों

में भी जागरूकता उत्पन्न करने का कार्य किया। उनके जीवन और योगदान का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि वे केवल एक शिक्षिका नहीं थीं, बल्कि सामाजिक न्याय, स्त्री-मुक्ति, जाति-विरोधी चेतना और मानवीय समानता की समर्थक भी थीं।

इस अध्ययन के अनुसार, सावित्रीबाई फुले के विचारों में नारीवाद की पहली लहर से संबंधित अनेक विशेषताएँ दिखाई देती हैं। नारीवादी आंदोलन की पहली लहर मुख्य रूप से महिलाओं के समान अधिकारों, शिक्षा, नागरिक स्वतंत्रता और सार्वजनिक जीवन में भागीदारी से जुड़ी रही है। सावित्रीबाई ने महिलाओं की शिक्षा को प्राथमिकता देकर उनके बौद्धिक विकास और आत्मनिर्भरता का मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि महिलाओं को भी तर्क करने, प्रश्न पूछने, अपने विचार व्यक्त करने और स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने का अधिकार होना चाहिए। उस समय जब महिलाओं को शिक्षा से दूर रखा जाता था, तब उनके लिए विद्यालय स्थापित करना और उन्हें पढ़ाना एक महत्वपूर्ण सामाजिक क्रांतिकारी कदम था। उनके कार्यों से यह विचार मजबूत हुआ कि महिलाओं की अधीनता का एक प्रमुख कारण शिक्षा से वंचित रहना भी है। शिक्षा के माध्यम से महिलाएँ अपनी सामाजिक स्थिति को समझ सकती हैं और अपने अधिकारों के लिए आवाज उठा स

सावित्रीबाई फुले उन्नीसवीं शताब्दी की एक महान समाज सुधारक, शिक्षाविद्, कवयित्री और महिला सशक्तिकरण की अग्रदूत थीं। उन्होंने ऐसे समय में महिलाओं की शिक्षा, सामाजिक समानता और मानवीय अधिकारों के लिए कार्य किया, जब भारतीय समाज में जातिगत भेदभाव, अस्पृश्यता, बाल-विवाह, विधवाओं के प्रति अमानवीय व्यवहार तथा महिलाओं की अशिक्षा जैसी अनेक समस्याएँ व्याप्त थीं। उस समय महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने के पर्याप्त अवसर नहीं मिलते थे और समाज के रूढ़िवादी वर्गों द्वारा उनके स्वतंत्र विकास का विरोध किया जाता था। ऐसी परिस्थितियों में सावित्रीबाई फुले ने अपने पति महात्मा ज्योतिराव फुले के साथ मिलकर सामाजिक परिवर्तन की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास किए। उन्होंने शिक्षा को समाज में व्याप्त अज्ञानता, असमानता और शोषण को समाप्त करने का प्रभावशाली माध्यम माना। उनके विचारों और कार्यों ने न केवल महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया, बल्कि समाज के वंचित, शोषित और पिछड़े वर्गों में भी जागरूकता उत्पन्न करने का कार्य किया। उनके जीवन और योगदान का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि वे केवल एक शिक्षिका नहीं थीं, बल्कि सामाजिक न्याय, स्त्री-मुक्ति, जाति-विरोधी चेतना और मानवीय समानता की समर्थक भी थीं।

सावित्रीबाई फुले ने अपने पति ज्योतिराव फुले के सहयोग से पुणे में लड़कियों की शिक्षा के लिए विद्यालय स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भिड़े वाडा में स्थापित बालिका विद्यालय भारतीय महिला शिक्षा के इतिहास में एक महत्वपूर्ण पड़ाव माना जाता है। उस समय लड़कियों को विद्यालय भेजना सामाजिक रूढ़ियों के विरुद्ध कदम समझा जाता था। इसके बावजूद सावित्रीबाई ने शिक्षिका के रूप में अपने कार्य को पूरी निष्ठा से आगे बढ़ाया। उन्होंने छात्राओं को पढ़ना-लिखना सिखाने के साथ-साथ उनके भीतर आत्मविश्वास, स्वतंत्र चिंतन और अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता विकसित करने का प्रयास किया। उनके लिए शिक्षा का उद्देश्य केवल पुस्तकीय ज्ञान प्रदान करना नहीं था, बल्कि महिलाओं को सामाजिक बंधनों से मुक्त करना और उन्हें आत्मनिर्भर बनाना भी था। उन्होंने यह संदेश दिया कि शिक्षा प्रत्येक मनुष्य का अधिकार है और किसी भी व्यक्ति को जाति, लिंग अथवा सामाजिक स्थिति के आधार पर इस अधिकार से वंचित नहीं किया जाना चाहिए।

सावित्रीबाई फुले का सामाजिक योगदान महिला शिक्षा तक सीमित नहीं था। उन्होंने बाल-विवाह, जातिगत भेदभाव, अस्पृश्यता और विधवाओं के प्रति होने वाले अन्याय का विरोध किया। उन्होंने विधवाओं को सामाजिक सम्मान दिलाने, उनके संरक्षण और उनके पुनर्विवाह के पक्ष में विचार प्रस्तुत करने तथा महिलाओं को अपमानजनक सामाजिक परिस्थितियों

से बाहर निकालने के लिए प्रयास किए। उनके कार्यों में यह विचार प्रमुख रूप से दिखाई देता है कि किसी भी समाज की वास्तविक प्रगति तभी संभव है, जब उसकी महिलाओं और वंचित वर्गों को समान अधिकार तथा सम्मान प्राप्त हो। उन्होंने समाज में व्याप्त असमानताओं को चुनौती देकर यह सिद्ध किया कि सामाजिक सुधार के लिए केवल विचार प्रस्तुत करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उन विचारों को व्यवहार में लागू करना भी आवश्यक है। इसी कारण सावित्रीबाई फुले का व्यक्तित्व भारतीय सामाजिक सुधार आंदोलन में विशेष महत्व रखता है।

निष्कर्ष:

सावित्रीबाई फुले के सामाजिक सुधार एवं महिला मुक्ति संबंधी विचारों का विश्लेषण करने से स्पष्ट होता है कि उनका संपूर्ण जीवन सामाजिक समानता, स्त्री-स्वतंत्रता और शिक्षा के अधिकार को समर्पित था। उन्होंने ऐसे समय में महिलाओं की शिक्षा का समर्थन किया, जब भारतीय समाज में जातिगत भेदभाव, पितृसत्तात्मक मान्यताएँ और रुढ़िवादी परंपराएँ महिलाओं की प्रगति में बाधक थीं। सावित्रीबाई फुले ने शिक्षा को महिलाओं की मुक्ति, आत्मनिर्भरता और आत्मसम्मान प्राप्त करने का सबसे प्रभावशाली माध्यम माना। ज्योतिराव फुले के साथ मिलकर उन्होंने बालिका शिक्षा के प्रसार तथा वंचित समुदायों के उत्थान के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए। उन्होंने विधवाओं, दलित महिलाओं और सामाजिक रूप से उपेक्षित वर्गों के अधिकारों के लिए संघर्ष करके सामाजिक सुधार को व्यावहारिक रूप प्रदान किया।

उनके विचारों की विशेषता यह थी कि वे केवल सामाजिक बुराइयों का विरोध नहीं करती थीं, बल्कि एक समानतामूलक और न्यायपूर्ण समाज के निर्माण का मार्ग भी प्रस्तुत करती थीं। उनका जीवन इस तथ्य को स्थापित करता है कि महिला मुक्ति केवल कानूनी अधिकारों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके लिए शैक्षिक अवसर, आर्थिक आत्मनिर्भरता, सामाजिक सम्मान और वैचारिक स्वतंत्रता भी आवश्यक हैं। वर्तमान समय में भी सावित्रीबाई फुले के विचार लैंगिक समानता, सामाजिक न्याय और समावेशी शिक्षा के लिए प्रेरणास्रोत हैं। अतः उनका योगदान भारतीय समाज में महिला सशक्तिकरण की आधारशिला के रूप में सदैव स्मरणीय रहेगा।

संदर्भ सूची :

1. पवार, एन. जी. (1999). महात्मा ज्योतिराव फुलेरु भारतीय समाज क्रांति के जनक. पुस्तक एनक्लेव।
2. कीर, धनंजय. (1997). महात्मा ज्योतिराव फुलेरु भारत क्रांति के जनक. लोकप्रिय प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड।
3. पाटील, पी. जी. (वर्ष अनुपलब्ध). महात्मा ज्योतिराव फुले (खंड 2). शिक्षा विभाग, महाराष्ट्र सरकार।
4. घेवर, जी. एस. (1996). जाति और जाति. लोकप्रिय प्रकाशन।
5. उपदेश, एच. सी. (1991). भारत में महिलाओं की स्थिति (खंड 2). अनमोल प्रकाशन।
6. चौहान, दि. (2013). दलित समाज की समस्याएँ. रावत पब्लिकेशन।
7. तिलक, र. (2017). सावित्रीबाई फुले रचना समग्र. द मार्जिनलाइड पब्लिकेशन।
8. पाण्डेय, वी. सी. (2012). एजुकेशन कल्चर एण्ड ह्यूमन वैल्यूज. इशा पब्लिकेशन।
9. बौद्ध, शां. र. (2004). सावित्रीबाई फुले सचित्र जीवनी. सम्यक प्रकाशन।
10. भारती, अ. (2015). सावित्रीबाई फुले की कविताएँ. स्वराज प्रकाशन।
11. माली, एम. जी. (2011). क्रांतिज्योति सावित्रीबाई फुले. पब्लिकेशन डिजीजन, भारत सरकार।
12. राय, वि., एवं रीता (2018). फर्स्ट इंडियन वुमन टीचर सावित्रीबाई फुलेरु बायोग्राफी ऑफ सावित्रीबाई फुले. एजुकेशन पब्लिशिंग।
13. वैद्य, प्र. (1992). ज्योतिबा फुले और उनकी परम्परा. लोक वाङ्मय।

Cite the Article:

देवी, पार्वती, दर्शन, प्रोफेसर राम. (2026). सावित्रीबाई फुले के सामाजिक सुधार एवं महिला मुक्ति संबंधी विचारों का विश्लेषण. *The Research Dialogue*, 5(3), 160–167. DOI: <https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i3.18>

Disclaimer: The views, opinions, interpretations, analyses, conclusions, recommendations, and statements expressed in this research article are solely those of the author(s) and do not necessarily represent the views, policies, or positions of the Publisher, Chief Editor, Editors, Editorial Board, Reviewers, or their affiliated institutions. The author(s) bear full responsibility for the originality, accuracy, authenticity, and integrity of the manuscript and for ensuring compliance with applicable academic and ethical standards, including those relating to plagiarism, AI-generated or AI-assisted content, copyright infringement, data fabrication or falsification, and other forms of research or academic misconduct.